कक्षा - XII हिन्दी (1)

गद्यखंड

प्रेमधन की छाया स्मृति

जीवनी — रामचन्द्र शुक्ल

जीवन परिचय : रामचन्द्र शुक्ल का जन्म उत्तर प्रदेश के अगौना गाँव में 1884 में हुआ प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू, अंग्रेजी और फारसी में हुई मगर इंटरमीडियर तक ही विधिवत पढ़ सके बाद में स्वाध्याय से संस्कृत, अंग्रेजी बांगला और हिन्दी के प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य का गहन गंभीर अध्ययन किया काशी हिन्दु विश्वविद्यालय में अध्यापक रहे और बाद में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे काशी नागरी सभा में हिन्दी शब्दसागर के निर्माण कार्य में सहायक सम्पादक का कार्य किया इनकी मृत्यु 1941 में हुई।

साहित्यिक विशेषता :- हिन्दी साहित्य को सम्यक ढंग से व्यवस्थित करना उनकी खासियत है आलोचनात्मक भावात्मक तथा मनोविकार संबंधी निबंध लिखना, सम्पादन करना तथा अनुवाद करना आदि

भाषा शैली → शुक्ल जी की गद्यशैली विवेचनात्मक है। तत्सम तथा उर्दू शब्दों का सहज व सरल प्रयोग किया है। विचार प्रधान सारगर्भित तर्क योजना इनकी भाषा की विशेषता है।

रचनाएँ → हिन्दी साहित्य का इतिहास रस- मीमांसा- जायसी ग्रंथावली चिंतामणि, भ्रमरगीत सार।

अभ्यास प्रश्न —

प्रश्न → लेखक ने अपने पिताजी की किन-2 विशेषताओं का उल्लेख किया

उत्तर — निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया।

1. उनके पिता फारसी भाषा के अच्छे ज्ञाता थे तथा प्राचीन भाषाओं के प्रशंसक थे
2. लेखक के पिता को हिन्दी के शब्दो को फारसी में अनुवाद करने का शौक था
3. लेखक के पिता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों के प्रशंसक थे
4. लेखक के पिता रात को अपनी परिवार को 'रामचरितमानस' बड़े चित्ताकर्षक ढंग से सुनाते थे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न बचपन में लेखक के मन में भारतेन्दु जी के संबंध में कैसी भावना जगी रहती थी

उत्तर - लेखक बचपन से ही भारतेन्दु हरिश्चंद्र के लिए आदर भाव रखते थे बचपन में वह भारतेन्दु हरिश्चंद्र तथा राजा हरिश्चन्दु के मध्य अंतर नही समझ पाते थे वे दोनो को एक ही समझते थे उनके मन में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के लिए मधुर भावना थी।

प्रश्न- उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' की पहली झलक लेखक ने किस प्रकार देखी?

उत्तर लेखक के पिता का तबादला मिर्जापुर से बाहर हो गया था वहाँ उन्हें एक दिन पता चला की भारतेन्दु हरिश्चन्दु के मित्र उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी वहा रहते है उनसे मिलने के लिए लेखक ने अपने मित्रों की एक टोली बनाई जो उनके घर से परिचित थे 1- 1½ मील का रास्ता तय कर वह एक घर के सामने पहुँचे। नीचे का बरामदा खाली था थोड़ी देर बाद ऊपर की मंजिल में एक खम्बे के सहारे एक आकृति दिखाई दी कंधे तक लम्बे बाल थे वही एक झलक दी।

प्रश्न → लेखक का हिन्दी साहित्य के प्रति झुकाव किस प्रकार बढ़ता गया?

उत्तर - लेखक के पिता फारसी के अच्छे जाता थे तथा हिन्दी के भी प्रशंसक थे उनके घर में भारतेन्दु हरिश्चन्द जी के नाटकों का वाचन होता था। लेखक के पिता ने उनका परिचय साहित्य से कराया। लेखक जिस पुस्तकालय मे हिन्दी की पुस्तके पढने जाते थे उन्होने मात्र 16 वर्ष की आयु मे लेखक का परिचय हिन्दी साहित्य के बड़े लेखकों की मंडली से करा दिया इस प्रकार लेखक का झुकाव हिन्दी साहित्य की तरफ हो गया।

प्रश्न चौधरी साहब की रोचक घटनाओं को अपने शब्दों में लिखो?

उत्तर (1) एक बार एक पंडित जी चौधरीसाहब से मिलने आये तो उन्होने बताया कि आज उनका एकादशी का व्रत है इसलिए उन्होंने बस जल खाया है तथा चौधरी साहब बोले कि जल ही खाया है या फलाहार भी किया है।

(2) चौधरी साहब से एक मित्र (पड़ोसी) मिलने पहुचे और घनचक्कर शब्द का अर्थ पुछा। चौधरी साहब ने कहा कि एक कागज कलम लो और दिनचर्या

लिख लो इसके बाद शाम को उसे पढ़ लो तो पता चल जायेगा
धनचक्कर का अर्थ क्या होता है।

(3) एक बार प्रसिद्ध कवि वनाचार्यागीरी चौधरी साहब से मिलने गए वह चौधरी साहब के लिए कविता लिख रहे थे अचानक ही उन्हें चौधरी साहब घर की बालकनी में खड़े दिखाई दिए। चौधरी साहब को देखते ही कवि बोल पड़े "खंभा टेकि खड़ी जैसे नारी मुगलाने की।

प्रश्न - "इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल का अद्भुत मिश्रण रहता था"। यह कथन किसके संदर्भ में कहा गया और क्यों? स्पष्ट करो

उत्तर यह कथन चौधरी साहब के लिए कहा गया क्योंकि वे उम्र में उनसे बड़े थे वह पुराने लेखक भी थे उनकी सभी बाते निराली थी। लेखक और उनकी लेखक मंडली प्रेमघन जी को पुरानी चीज समझा करते थे उनसे मिलते समय लेखक ~~और~~ को ऐसा लगता था वह पुराने साहित्यकार से मिल रहे हैं उनसे मिलने पर कोई-न कोई नई बात अवश्य सुनने को मिलती थी उनके प्रति कुतुहल बना रहता था।

प्रश्न शुक्ल जी की मित्र मंडली को देखकर लोग उन्हें किस नाम से पुकारते थे तथा क्यों?

उत्तर - शुक्ल जी की मित्र मंडली को देखकर उर्दू भाषी लोग उन्हें निस्संदेह के नाम से पुकारते थे क्योंकि उन्हे लेखक मंडली की बोली अनोखी लगती थी क्योंकि वहाँ रहने वाले वकील मुख्तार तथा कचहरी ~~की~~ के अफसरों की भाषा उर्दू थी इसलिए लेखक मंडली का नाम "निस्संदेह" मंडली रख दिया था

प्रश्न → प्रस्तुत संस्मरण में लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के किन-किन पहलुओं को उजागर किया?

उत्तर लेखक ने चौधरी साहब के व्यक्तित्व के निम्न पहलुओं को उजागर किया। (1) हिन्दी प्रेमी → चौधरी साहब हिन्दी कवि थे वह प्रेमघन उपनाम से लेखन करते थे वे हास्य प्रेमी थी

(2) रियासती व्यक्ति → चौधरी साहब रियासती और तहजीब वाले थे हर उत्सव व अवसर मे उनके घर नाचरंग का आयोजन होता था।

(3) आकर्षक व्यक्तित्व → उनका व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक था लम्बा कद, कंधे तक लटकते ~~बाल~~ बाल उनकी पहचान थी।

Scanned with CamScanner

H.W

सप्रसंग व्याख्या करो:

ज्यों-ज्यों मैं सयाना होता गया, त्यों-त्यों हिन्दी के नूतन साहित्य की ओर मेरा झुकाव बढता। क्वीन्स कॉलेज में पढ़ते समय स्वर्गीय बाबू रामकृष्ण वर्मा मेरे पिताजी के सहपाठियों में से एक थे भारत जीवन प्रेस की ~~पुस्तकें~~ पुस्तकें प्रायः मेरे यहाँ आया करती थीं, पर पिताजी उन पुस्तकों को छिपाकर रखने लगे। उन्हें डर हुआ की कही मेरा चित्त स्कूल की पढाई से हट न जाये मैं बिगड़ न जाऊँ। उन्हीं दिनों पंडित केदारनाथ पाठक ने एक हिन्दी पुस्तकालय खोला था। मैं वहाँ से पुस्तकें लाकर पढा करता था एक बार एक आदमी साथ करके मेरे पिताजी ने मुझे एक बारात में काशी भेजा। मैं उसी के साथ घूमता फिरता चौखंभा की ओर जा निकला। वहीं पर एक घर में से प० केदारनाथजी पाठक निकलते दिखाई पड़े पुस्तकालय में वे मुझे प्रायः देखा करते थे इससे वे देखते ही वे वहीं खड़े होगए वह भारतेन्दुजी का घर था।

प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्यपुस्तक अन्तरा के गद्यखंड में संकलित प्रेमघन की छायास्मृति" से लिया गया है इसमें लेखक अपने बचपन के प्रसंगो का वर्णन करते हुए कहता है—

व्याख्या → गृहकार्य

प्रश्न - निसंदेह शब्द को लेकर लेखक ने किस प्रसंग का उल्लेख किया है?

प्रश्न - लेखक ने चौधरी साहब की कुछ रोचक घटनाओं का उल्लेख किया है उन्हें अपने शब्दों में लिखो?

प्रश्न - "इस पुरातत्व की दृष्टि में प्रेम और कुतूहल शब्द का अद्भुत मेल था" यह कथन किसके संदर्भ मे कहा गया और क्यों?

प्रश्न समवयस्क हिन्दी प्रेमियों की मंडली में कौन-2 से लेखक मुख्य थे

~~प्रश्न~~

Scanned with CamScanner